।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2024-26

दयानन्दाब्दः 199
मानव सृष्टि सं. : 1960853124
सृष्टि सं.: 1972949124

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/— आजीवन : रू.1100/— वार्षिक शुल्क : रू.100/— (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-23 अंक-06 ज्येष्ठ शुक्ल दशमी से आषाढ़ कृष्ण नवमी तक संवत 2081 विक्रमी 16 से 30 जून 2024 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती एवं आर्य समाज के १५०वें वर्ष क्रम पर

विशाल ऐतिहासिक आर्य समारोह यूनाइटेड किंगडम के बर्मिंघम में धूमधाम से सम्पन्न

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

बर्मिंघम। लगभग १००० श्रद्धालु आर्य हिन्दु लोगों की भव्य उपस्थिति में यहां प्रथमतः चतुर्वेदशतकम् यज्ञ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रतिष्ठित प्रधान श्रद्धेय पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व और नीदरलैंड्स हालेंड और यू के से आमन्त्रित वैदिक आचार्य विद्वान् डॉ. नरदेव जी, सामवेदी ओमप्रकाश, विजय प्रसाद शास्त्री, पं. महाबली आर्य, श्री तिवारी जी और हालेंड आर्य सभा के प्रधान जी के साथ यू के के विद्वान् आचार्य डॉ उमेश यादव, मिनिस्टर आफ रेलिजन आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्ट मिडलैंड्स बर्मिंघम और आचार्य डॉ ताना जी, डॉ रामचन्द्र आर्य, आचार्य अरुण शास्त्री आदि द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ विशाल महायज्ञ अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ ।

जहां विशिष्ट अतिथि के रुप में भारत सरकार के प्रतिनिधि भारत का बर्मिंघम कान्सुलावास से प्रधान दूतावास डॉ वेंकेटाचलम मुरुगण सपरिवार, बर्मिंघम मेयर श्री चमनलाल जी सपरिवार रहे , वहीं भारत के हैदराबाद से पधारे प्रो. विट्ठल राव, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री बिरजानन्द यादव, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, मेजर विजय कुमार चंडीगढ़ एवं चौधरी सुखबीर आर्य रोहतक भी रहे ।

समारोह में यज्ञ की भव्यता के साथ दूसरी बैठक में भव्य वैदिक सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य, संस्कृत में गीतिका, मंत्रोच्चारण आदि प्रस्तुतियों से तो भारत की विविधता में शानदार एकता देखते बनी । वहां विशेष उद्बोधन आर्य समाज की गरिमा पर आर्य समाज वैदिक मिशन वेस्ट मिडलैंड्स बर्मिंघम के संरक्षक मान्य श्री कृष्ण चोपड़ा, मिनिस्टर आफ रेलिजन आचार्य डॉ उमेश यादव जी की आर्य समाज वैदिक धर्म की महिमा पर आकर्षक कविता , प्रो. विट्ठल राव द्वारा वैदिक धर्म की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत किये गये । सी जी ई बर्मिंघम डॉ वेंकेटाचलम मुरुगण एवं बर्मिंघम मेयर के उद्बोधन ही भरपूर समारोह की सार्थकता दिखा रहे थे । सभी अतिथियों के साल , मोमोंटो आदि द्वारा स्टेज पर सम्मानित किया गया जो एक अलग ही आकर्षण झलक रहा था । बीच में विश्व विख्यात योग गुरु पूज्य बाबा रामदेव जी महाराज का विडियो संदेश भी प्रस्तुत किया । यू के के प्रधान मंत्री ऋषि सूनक की शुभ कामना संदेश भी पढ़ा गया । मारिशश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की प्रेरक शुभकामना सन्देश भी संस्था के प्रधान श्री रविन्द्र रेणुकूंटा ने पढ़कर सुनाया ।

मुख्यातिथि श्रद्धेय स्वामी आर्यवेश जी महाराज का महर्षि दयानन्द की प्रेरणा, आर्य समाज की प्रासंगिकता, कार्य, आर्य स्वतंत्रता सेनानी आदि विषयों पर उद्बोधन ने तो अल्प काल में ही आर्य जनता के हृदयों पर आर्य धर्म और आर्य संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक अमिट छाप छोड़ा । उनके प्रेरक भाषण से सभी उपस्थित आर्य हिन्दु नर-नारी युवा-बच्चे -बड़े अत्यन्त प्रभावित हुये। कार्यक्रम स्थल के प्रवेश द्वार पर भारत के कतिपय विशेष आचार्यों, विद्वानों और आर्य कार्यकत्ताओं के महत्वपूर्ण विडियो संदेश स्क्रीन पर चलाये जा रहे थे जिसमें लगभग २० लोगों के थे ।

शेष पृष्ठ 4 पर

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती नहीं रहे

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

आर्य नगर (हिसार)। आर्य जगत के समर्पित विद्वान सन्यासी स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती का दिनांक 11 जून को दोपहर 1.30 बजे निधन हो गया। आर्य समाज (नागोरी गेट) के प्रांगण में उनका पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शनों एवं भावभीनी श्रद्धांजलि हेतु रखा गया।

स्वामी जी का अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि विधान से ऋषि नगर स्थित शमशान घाट पर सुबह 10.00 बजे किया गया।

पूज्य स्वामी जी का संपूर्ण जीवन आर्य समाज के उद्देश्यों के पालन करने हेतु, सामाजिक उत्थान एवं वेदप्रचार,विभिन्न गुरुकूलो के संरक्षण व युवाओं को संस्कारों से सुसज्जित करने हेतु समर्पित किया हुआ था। उनका आकस्मिक निधन सभी के लिए दुखद और समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है। समस्त गुरुकुल व आर्य परिवार की ओर सेपरमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि स्वामी जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें । हार्दिक श्रद्धांजली।

वेद वाणी

वीर्य रक्षा द्वारा शरीर की दृढता, मन की निर्मलता व बुद्धि की तीव्रता आदि उत्तम धनों को प्राप्त करके हम सदा सिद्धि को प्राप्त करें!

(वरिवोधातमो भुला महिष्ठो वृत्रहन्तमः! पर्षि रातो मघोनाम्!) ६९१-३

व्याख्या यह सोम वरिवो - धा- तम है! उत्तम धनों को अतिशयेन धारण करने वाला है! इसने शरीर को वज्रतुल्य दृढता मन को निर्मलता तथा बुद्धि को तीव्रता प्राप्त करायी है! ये ही मानव के सर्वोत्तम धन है! मधु छन्दः कहता है कि हेसोम

तू वरिवोधातमः भुवः

उत्तम धनों का देने वाला है! इन्ही से मनुष्य धन्य बनता है! महिष्ठः तू दातृतम है! इन धनो खूब देता हैऔर वृत्रहन्तमः ज्ञान को आवृत करने वाली इन वासनाओं को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है! वासनाएं ही मनुष्य की उन्नति के मार्ग में बाधक होती है! इन्हीं के कारण मनुष्य अपने कार्यों में सफल नहीं हुआ करते हैं, परंतु जब सोम रक्षा द्वारा मनुष्य इन पर विजय पा लेता है, तब इन मघोनाम् इन्द्रों वासना रूप असुरो को नष्ट करने वालों की राधः सिद्धि को सफलता को पर्षि तू पूर्ण करता है! वीर्यवान पुरुष ही सिद्धि को प्राप्त करते हैं! मन्त्र का भाव है कि- पुष्ट शरीर वाले होकर, क्रियाशील होकर, मनों से राक्षसी वृत्तियों को दूर करके प्रभु ज्ञान को प्राप्त करने वाले बनें

सुप्रभात सुमन भल्ला

सम्पादकीय

स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज की भूमिका

देश की स्वतंत्रता में आर्य समाजियों की भूमिका अग्रणी रही है। स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी। राष्ट्र के संगठन के लिए जात-पात के झंझटों को मिटाकर एक धर्म, एक भाषा और एक समान वेशभूषा तथा खानपान का प्रचार किया। यह कहना है कि धनबाद निवासी राजार्य सभा के प्रदेश अध्यक्ष हरहर आर्य का। उन्होंने कहा कि हिंदी भारत राष्ट्र की राजभाषा बन चुकी है। किंतु पूर्व में जब हिंदी का कोई विशेष प्रचार न था, उस समय महर्षि दयानंद ने हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने की घोषणा की। स्वयं गुजराती तथा संस्कृत के उद्भट विद्वान होते हुए भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथों की हिंदी में रचना की थी। दीर्घकालीन दासता के कारण भारतवासी अपने प्राचीन गौरव को भूल गये थे, इसलिए महर्षि दयानंद ने उनके प्राचीन गौरव और वैभव का वास्तविक दर्शन करवाया। 1857 के पश्चात के क्रांतिकारियों पर महर्षि दयानंद सरस्वती का अत्यंत प्रभाव था। क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानंद, सेनापति बापट, मदनलाल धींगरा इत्यादि जैसे शिष्यों ने स्वाधीनता आंदोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इंग्लैंड में भारत की स्वतंत्रता के लिए जितने प्रयास हुए वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के इंडिया हाउस से हुए। अमेरिका में भारत की स्वाधीनता के लिए जो प्रयास हुए, वे भाई परमानंद के समर्पण और सहयोग का फल है। डीएवी कालेज लाहौर में इतिहास और राजनीति के प्रो जयचंद्र विद्यालंकार पंजाब के क्रांतिकारियों के मार्गदर्शक रहे हैं।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता किशन सिंह भी आर्य समाजी थे। भगत सिंह के विचारों पर भी आर्य समाज के संस्कारों की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। सांडर्स को मारकर भगत सिंह आदि पहले तो लाहौर के डीएवी कालेज में ठहरे, फिर योजनाबद्ध तरीके से कलकत्ता जाकर आर्य समाज में शरण ली और आते समय आर्य समाज के चपरासी तुलसीराम को अपनी थाली यह कहकर दे आए थे कि कोई देशभक्त आए तो उसको इसी में भोजन करवाना। दिल्ली में भगत सिंह, वीर अर्जुन कार्यालय में स्वामी श्रद्धानंद और पंडित इंद्रविद्या वाचस्पति के पास ठहरे थे। उस समय ऐसे लोगों को ठहराने का साहस केवल आर्य समाज के सदस्यों में ही था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कांग्रेस के प्रमुख कार्यकताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्यसमाजी के घर में ही मिलता था।

महर्षि दयानन्द का पर्यावरण चिंतन

विवेक आर्य
आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

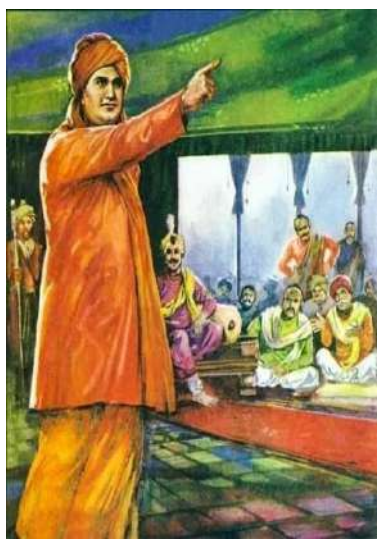

महर्षि दयानन्द जी ने अपनी पुस्तक गौकरूणानिधि नामक पुस्तक पर्यावरण की रक्षा के विषय में लिखते हैं--

इसीलिये आर्यावर्त्तीय राजा, महाराजा, प्रधान और धनाढ्य लोग आधी पृथ्वी में जंगल रखते थे कि जिससे पशु और पक्षियों की रक्षा होकर औषधियों का सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों, जिनके खाने पीने से आरोग्य, बुद्धि-बल, पराक्रम आदि सदगुण बढ़ें। वृक्षों के अधिक होने से वर्षा-जल और वायु में आर्द्रता और शुद्धि अधिक होती है। पशु और पक्षी आदि के अधिक होने से खाद भी अधिक होता है।

परन्तु इस समय के मनुष्यों का इससे विपरीत व्यवहार है कि जंगलों को काट और कटवा डालना, पशुओं को मार और मरवा खाना और विष?टा आदि का खात खेतों में डाल अथवा डलवा कर रोगों की वृद्धि करके संसार का अहित करना, स्वप्रयोजन साधना और परप्रयोजयन पर ध्यान न देना; इत्यादि काम उल्टे हैं।

जीवन में कैसे प्राप्त करें शांति व प्रसन्नता ?

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)
इंजी. सुरेश अग्रवाल

संसार का प्रत्येक मनुष्य जीवन में शांति, सुख व प्रसन्नता पाना चाहता है, परंतु कहां से यह सब मिलता है, उसको मालूम नहीं है। अपना सारा समय जीवन की भौतिक सुख, सुविधा पाने में व्यतीत कर देता है। अच्छे अच्छे पद पर बैठे प्रशासनिक अधिकारी, व्यापारी, डॉक्टर व वकील आदि जीवन में सुखी नहीं है। उन्हें कोई न कोई शारीरिक, मानसिक बीमारी है, जिससे वे सब न तो अपना भला कर सकते हैं ,और न ही अपने परिवार और समाज का। ये मनुष्य देश के कोई काम नहीं आ सकते हैं, इस प्रकार उनका यह मनुष्य जीवन जो कि बहुत बडे उद्देश्य के लिए परमपिता परमेश्वर ने दिया है, व्यर्थ ही व्यतीत हो रहा है।

किसी कवि ने मनुष्य जीवन की सार्थकता निम्नलिखित दोहे में स्पष्ट की है

"जगत में जब तू आया था, सभी हंसते तू रोता था।
बना ले साधना ऐसी, सभी रोए तू हंसता जा।। "

विचार करें कि जीवन का वास्तविक आनंद कैसे मिले? मैं अपने जीवन के अनुभवों को निश्चय पूर्वक निम्न ढंग से प्रस्तुत कर रहा हूं

1. आर्य समाज के द्वितीय नियम के अनुसार ईश्वर के 21 गुणों में से एक गुण आनंद स्वरूप /आनंद का सागर है। अतः

1. आवश्यकता है कि हम अपनी दिनचर्या में उसे आनंद स्रोत के पावर हाउस से स्मरण रूपी तार जोड़कर जीवन में आनंद रूपी विद्युत धारा का सतत प्रवाह होने दें।

2. ईश्वर का सबसे निकट स्थान हमारा मानव शरीर है। अतः हम शरीर रूपी मंदिर को स्वस्थ, स्वच्छ व सुंदर रखें, तभी प्रभु की सद प्रेरणा को हम भली प्रकार अनुभव कर सकते हैं और अपने को दुगुर्णों से बचा सकते हैं।

3. आध्यात्मिक रूप से मानव का वास्तविक भौतिक आधार प्रकृति है, जिसके पांच तत्वों से यह मानव शरीर बना है

क्षति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंचतत्व मिल बना शरीरा।।

अतः प्रातः काल की मधुर वेला में यह वात्सल्यमयी प्रकृति मां अपने पुत्र का आतुर्भाव से प्रतीक्षा कर रही होती है, कि मेरा पुत्र प्रातः भ्रमण करने के बहाने आए, तो वह उसे प्रेम से स्वस्थ, प्रफुल्लित व आनंदित कर दे, परंतु यह अभागा मनुष्य देरी से निंद्रा से जगाता है तथा वह न ही प्रयास करता है, और न ही शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कोई योग, व्यायाम, आसन, प्राणायाम करता है।

4. हमने सुना है, कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। जब शरीर ही स्वस्थ नहीं रहेगा, तब मस्तिष्क भी कैसे शांत भाव से किसी विषय पर विचार कर सकेगा। 5. भगवत गीता का एक बहुत ही सुंदर विचार है, आवश्यकता है उसे समझने व जीवन में क्रियात्मक करने की

"कर्मन्येवाधिकारस्ते मां फलेशु कदाचन "

अर्थात् बिना स्वार्थ के कर्म किए जा, उसका फल अच्छा - बुरा उस ईश्वर पर छोड़ दे। इस सोच से मनुष्य मानसिक अशांति व उच्च रक्तचाप आदि व्याधियों से बच सकता है।

6. किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि **"जैसा खाएगा अन्न, वैसा बनेगा मन "**

अर्थात् अपनी पवित्र कमाई के सात्विक शाकाहारी भोजन से हमारा मन भी पवित्र व सकारात्मक सोच वाला बन सकता है।

7. इस सृष्टि का नियम है -

(अ) **"मिटा दे अपनी हस्ती को कि गर कुछ मर्तबा चाहे,**
कि दाना खाख में मिलकर, गुले गुलजार होता है"।

(ब) **"तरुवर फल नहीं खात हैं ,नदी न संचे नीर। परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।"**

(स) **"ईश्वर हमें देते हैं सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें "**

अतः जब तक मनुष्य ईश्वर द्वारा संसार में चलाए जा रहे परोपकार के कार्यों से प्रेरणा नहीं लेगा तथा अपनी दिनचर्या में किसी की भलाई ,

सेवा के कार्यों को प्रमुखता नहीं देगा, तब तक वह परमात्मा का कृपा पात्र, परम प्रिय मित्र नहीं बन सकता तथा उसका कल्याण नहीं हो सकता। उसके जीवन में सुख शांति व आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अंत में सभी प्रबुद्ध पाठक भाई बहनों से विनती है, कि उपरोक्त अनुभवों को समझे व अपने जीवन में उन्हें उतारने का प्रयास करें , ताकि ईश्वर की यह अनुपम कृति मानव जीवन में शांति व प्रसन्नता स्वयं भी प्राप्त करें और परिवार को भी करायें । समाज व राष्ट्र के निर्माण में सहयोग करें तथा जीवन के उत्कृष्ट लक्ष्य (मुक्ति) न मिल सके, तो अगला जन्म मनुष्य योनि का मिले ।

धन्यवाद

*विशेष प्रतिनिधि आर्यावर्त केसरी *
सेक्टर 15, नोएडा (मो - 98189

वेदाध्ययन की आवश्यकता

आर्यावर्त केसरी

वेदों के अध्ययन एवं प्रचार की आज अत्यन्त आवश्यकता है। वेदों के साचार अध्ययन में ही मानव की सुख-शान्ति एवं उज्ज्वल भविष्य निहित है। परन्तु यह हो कैसे? हम वेद को दिव्य काव्य मानते हैं। हम वेद को सत्यविद्याओं की पुस्तक स्वीकारते हैं कि वैदिकधर्म ही सार्वभौम धर्म है। किन्तु इस मान्यता इस स्वीकारोक्ति तथा इस दावे का मूल्य क्या है? जब तक कि हम वेदों को सर्वगम्य बनाकर उन्हें मनुष्यमात्र तक नहीं पहुंचाते? भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक वेद की विचारधारायें मानवों में प्रचलित रहीं, तभी तक इस देश की संस्कृति एवं सभ्यता संसार में सर्वोपरि रही। जब से वेदों का संकोच प्रारम्भ हुआ है, तभी से वेदानुयायियों के दैन्य-भावनायुक्त जीवन के प्रकरण का प्रारम्भ हुआ है। यही नहीं, शनैः शनैः वेद से हम इतने दूर होते गये कि कालान्तर में वेदों के लुप्त हो जाने तक की कल्पना कर ली गई। वर्तमान युग में वेदों का तात्पर्य इतना दुर्गम हो गया है कि उनके वास्तविक अभिप्राय की अटकले-मात्र लगाई जा रही हैं।

वेद एक है और उसके चार काण्ड हैं। प्रथम ज्ञानकाण्ड का नाम ऋग्वेद है। दूसरे कर्मकाण्ड का नाम यजुर्वेद है। तीसरे उपासना काण्ड का नाम सामवेद है। चौथे विज्ञान काण्ड का नाम अथर्ववेद है। ज्ञानकाण्ड ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त में कर्म के यथावत पालन का संकेत करके कर्मकाण्ड यजुर्वेद में श्रेष्ठतम कर्म की शिक्षा दी गई है। कर्मकाण्ड यजुर्वेद का उपसंहार जिस अध्याय में हुआ है

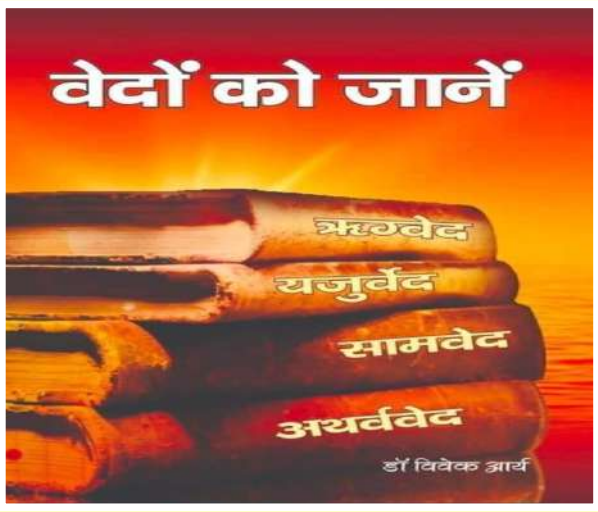

पुस्तक वेदों को जानें । मूल्य -330 मंगवाने के लिए 070155 91564 पर वट्सएप द्वारा सम्पर्क करें। लेखक- स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती
प्रस्तुति- प्रियांशु सेठ

उसके अन्तिम मन्त्रों में उपासना का संकेत किया गया है और उपासना काण्ड सामवेद में उपासना की प्रतिष्ठा की गई है। सामवेद के अन्तिम मन्त्र में स्वस्तिपाठ है। स्वस्ति का अर्थ है सु-अस्ति, सु-अस्तित्व, विज्ञानमयपूर्ण जीवन। शरीर, बुद्धि, मेधा, चित्त और आत्मा की पूर्णता से मानव का स्वस्तिमय अथवा विज्ञानमय जीवन बनता है। स्वस्तिमय अथवा विज्ञानमय जीवन से युक्त पूर्ण पुरूष को ही विज्ञान की प्राप्ति होती है। सृष्टि, आत्मा और परमात्मा के इन्द्रियजन्य बोध का नाम ज्ञान है। आत्म-अवस्थिति द्वारा ब्रह्मस्थ होकर तीनों के साक्षात्कृत ज्ञान का नाम विज्ञान है। स्वस्ति का सम्पादन करके विज्ञान की प्राप्ति वेद के विज्ञानकाण्ड अथर्ववेद का प्रतिपाद्य है। स्वस्ति का सम्पादन और विज्ञान की उपलब्धि अभ्यास का विषय है। इसके लिए विज्ञानवेत्ता गुरु की आवश्यकता होती है। विज्ञानवान् गुरु के बिना इस मार्ग पर गति नहीं होती।

मानव की प्रत्येक सम्पत्ति, उसकी प्रत्येक उपलब्धि, उसकी बुद्धि, हृदय, चित्त, मन, ज्ञान-कर्मेन्द्रियां उसके विचार व भावनायें, उसके संस्कार व प्रवृत्तियां, उसकी भौतिक प्राप्तियां-सबकुछ 'भूताय' भूतमात्र, प्राणिमात्र के लिए हैं। मानव ने जब-जब इस चेतावनी की उपेक्षा की है, तब-तब ही ठोकरें खानी पड़ी हैं। न केवल भौतिक उपलब्धियां, अपितु मानसिक व बौद्धिक विचारधारायें भी इसी विशाल लक्ष्य को लिये हैं। जिस प्रकार भौतिक शक्तियों के संग्रह एवं संकुचित प्रयोग से मानवजाति ओर संकट आये हैं तथैव विचारों एवं विद्याओं का संकोच से भी भयंकर आपदायें आई हैं। भौतिक संकुचन से वैचारिक एवं विद्यासम्बन्धी संकुचन कहीं अधिक भयानक होता है। इस दूसरे प्रकार के संकोच का परिणाम अनन्तकाल तक मानवों को भोगना पड़ता है। यही नहीं, स्वयं विचारों और विद्याओं के स्वस्थ अस्तित्व एवं अभिवर्धन के लिए भी यह नितान्त आवश्यक है कि संकोच के स्थान में 'विश्व जनहिताय' का लक्ष्य अभिमुख रहे। अन्ततः किसी भी वस्तु के अस्तिव का अभिप्राय परार्थ ही तो है। यदि परार्थ के स्थान में उसका लघु स्वार्थों के लिए उपयोग होने लगे, तो न केवल उपयोक्ता, परन्तु वस्तु भी, दोनों ही भ्रष्ट एवं नियति-नियत कर्त्तव्य से च्युत होने के दोषभागी बनते हैं।

देश में इसी कारण विद्या के लक्ष्य रखा गया था 'विमुक्ति'। विद्या वह है जो स्वयं मुक्त हो, उदार हो, विशाल हो और अपने व्यसनी को भी उदार, मुक्त और विशाल बना दे। इसी कसौटी पर हम यदि वेद और वैदिक विद्याओं को परखें, तो हम मानवों के मस्तक लज्जा एवं ग्लानि से झुक जाते हैं। हमने वेदों को संकुचित कर दिया। उनके पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन, श्रवण-मनन सब पर कठिन अंकुश लगा दिये। इतना डराया और घबराया गया अबोध जनता को कि अशुद्ध पाठ के भय से सर्वनाश की आशंका आ गई और फलतः समाज का एक अत्यन्त विशाल भाग वेदों से वंचित हो गया। मानवता की जड़ों पर कुठाराघात करने वाली वेद के तथाकथित ठेकेदारों की निकृष्ट एवं संकुचित मनोवृत्ति का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि समाज के श्रमिक शूद्रवर्ग तथा उस नारी वर्ग को जिसकी पूजा को स्वर्गोपलब्धि का साधन कहा गया था, एकबारगी ही वेद के अध्ययन से अधिकारच्युत कर दिया गया। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उद्घोषक महामानव किस प्रकार अपने हृदय को इतना कठोर बना सके कि 'स्त्रीशूद्रो नाधीयताम' के वचन उनके मुख से निकल पाये। यह कैसी विडम्बना है?

वेद के संकोच के भयंकर अपराध का फल आज तक हम ही नहीं समस्त मानवजाति भोग रही है। कहां वेदों के उदात्त, महतो महान्, हिमालय के सर्वोच्च शिखर के समान उज्ज्वल, प्राणपोषक एवं उदारतम विचार व भावनायें और कहां इस युग में प्रचलित भय, आशंका, निराशा, मृत्यु एवं स्वार्थ की चरमसीमा को भी पार करनेवाली महाविनाशकारी, जघन्य, कुत्सितातीत अमानवीय भावनायें। वेद जीवन में विश्वास करना सिखाता है मृत्यु में नहीं। वेद 'उद्यानं ते पुरुष' का उद्घोष करता है तो वर्तमान विचारधारायें दुःखमय जीवन, अनास्था, अनुत्साह, नीरसता, अकर्मण्यता, भीरुता, अविश्वास एवं अत्यंत काले भविष्य की ओर संकेत करने वाली हैं। मानवजाति का भविष्य तभी समुज्ज्वल होगा, जब वेद की उदात्त शिक्षाओं का मनन एवं आचरण होने लगेगा। आइये, वेद में श्रद्धा रखने वाले हम सब मानव इस यज्ञ की सफलता के लिए कटिबद्ध हो जायें।

-'सर्वहितकारी' से साभार

नेत्रदानी आर्य नेता अर्जुन देव चड्ढा का अवसान आर्य जगत की अपूर्णनीय क्षति

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, शांतिलाल धारीवाल, सुरेश आर्य, विनय आर्य, सतीश चड्ढ़ा, देवेंद्र पाल वर्मा व आचार्य वाचोनिधि आर्य सहित हजारों ने दी दिवंगत आर्य नेता को भाव भीनी श्रद्धांजलि

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

कोटा / आचार्य अग्निमित्र शास्त्री। आर्य समाज के प्रति समर्पित, महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त, वैदिक मिशनरी आर्य नेता श्री अर्जुनदेव चड्ढा की स्मृति में कोटा के गीता भवन में श्रद्धांजलि सभा संपन्न हुई, जिसमें देश विदेश से उनके प्रशंसकों, परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों ने अपने दिवंगत आर्य नेता को सादर श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए कहा कि स्मृतिशेष श्री चड्ढ़ा जी के सेवा कार्य सभी के लिए प्रेरणादायक हैं। सभी ने इस बात पर भी विशेष बल दिया कि अभावग्रस्त, जरूरतमंद व निराश्रित लोगों के लिए सेवा व सहयोग के जो कार्य आर्य समाज कोटा के माध्यम से श्री चड्ढा जी ने प्रारंभ किये, वे निरंतर चलते रहने चाहिए।

श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा कि श्रद्धांजलि सभा से पूर्व वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में शांति यज्ञ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री शास्त्री ने कहा कि कोटा में आर्य समाज के कार्यों को गति देने का जो कार्य श्री चड्ढा जी ने किया, निश्चय ही वह अभूतपूर्व है। आर्य समाज के छठे नियम "संसार का उपकार करना इस समाज का प्रमुख उद्देश्य है" का यथार्थ आचरण श्री चड्ढा जी के जीवन में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है।

इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला, राजस्थान सरकार के पूर्व नगरीय विकास मंत्री श्री शांतिलाल धारीवाल, कोटा दक्षिण विधायक श्री संदीप शर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, केंद्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सतीश चड्ढ़ा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेंद्र पाल वर्मा, आर्य समाज गांधीधाम के प्रधान आचार्य वाचोनिधि आर्य, आर्यावर्त केसरी दैनिक व पाक्षिक के प्रधान संपादक डॉ. अशोक आर्य , पतंजलि भारत स्वाभिमान के प्रभारी श्री अरविंद पांडेय तथा गायत्री परिवार ट्रस्ट के प्रमुख श्री जी. डी. पटेल आदि सहित अनेक संस्थाओं के प्रमुख अधिकारियों से प्राप्त शोक पत्रों का वाचन किया गया।

इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कोटा संभाग के महामंत्री श्री अरविंद पांडेय ने बताया कि आज कोटा में गीता भवन स्थित सभागार में कोटा के कर्मठ आर्य नेता व कुशल नेतृत्वकर्ता वरिष्ठ समाजसेवी श्री चड्ढ़ा जी के आकस्मिक देहावसान पर आयोजित शोक सभा में सामाजिक , धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्रों के गणमान्य जनों द्वारा स्वर्गीय अर्जुन देव चड्ढा जी के कार्यों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान की गई।

इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ मंत्री एडवोकेट श्री चंद्रमोहन कुशवाहा ने श्री चड्ढा जी का विस्तृत जीवन परिचय प्रस्तुत किया।

सभा में श्री चड्ढा जी के सामाजिक जीवन पर आधारित एक लघु चलचित्र भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें चड्ढा जी के नेतृत्व में आर्य समाज द्वारा किए गये सेवा , सहयोग व सामाजिक जागरूकता के कार्यों का संक्षिप्त वृतचित्र वर्णन किया गया।

श्रद्धांजलि सभा में के अंत में वेद मन्त्रोच्चार के साथ 2 मिनट का मौन रखकर विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों, प्रबुद्ध आर्य जनों, कोटा के विभिन्न संस्थाओं के हजारों गणमान्य पुरुषों व महिलाओं द्वारा शान्तिपाठ पूर्वक भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई ।

इस अवसर पर श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा के पुत्र श्री राकेश चड्ढ़ा व मुकेश चड्ढ़ा और आर्य समाज के युवा कार्यकर्ता श्री किशन आर्य ने सभी आगंतुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

पूर्वोत्तर भारत में यतीन्द्र कटारिया राजभाषा हिंदी का करेंगे शंखनाद

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

अमरोहा। जनपद के वरिष्ठ शिक्षक राज्य अध्यापक पुरस्कार व विश्व हिन्दी सेवा सम्मान से अलकतप्राप्त शिक्षक डॉ0 यतीन्द्र कटारिया एक सप्ताह के पूर्वोत्तर राज्यों के दौरे पर राजभाषा हिन्दी का शंखनाद करते हुए आसाम के गुवाहाटी डिब्रुगढ़ व राजधानी दिसपुर सहित मेघालय की राजधानी शिलांग में आयोजित राजभाषा संवाद व हिन्दी कार्यशालाओं को सम्बोधित करेंगे तथा आसाम व मेघालय के राजभवन में राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुति देंगे।

प्राप्त विवरण के अनुसार अंतरराष्ट्रीय हिंदी सेवी तथा विश्व हिंदी मंच के संयोजक डॉ0 यतीन्द्र कटारिया अपनी देशव्यापी हिंदी सेवा यात्राओं के अंतर्गत भारत सरकार के विभिन्न उपक्रमों द्वारा गुवाहाटी एवं शिलांग आदि स्थानों पर आयोजित हिंदी संवाद एवं हिंदी कार्यशाला आदि समारोह को संबोधित करने के लिए अपने सात दिवसीय यात्रा पर पूर्वोत्तर भारतमें पहुंचे हैं। यहां पहुंचने पर भारत सरकार के उपक्रम पावर ग्रिड के क्षेत्रीय महाप्रबंधक ने उनका स्वागत किया। डॉक्टर यतीन्द्र कटारिया यहां असम के राज्यपाल गुलाब चन्द कटारिया व मेघालय के राज्यपाल फागू चौहान के समक्ष राजभवनों में भी प्रस्तुति देंगे तथा असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व सरमा से भी भेंट करेंगे। वह यहाँ राजभाषा के रूप में हिंदी के व्यवहारिक पहलू एवं विश्व पटल पर हिंदी का बढ़ता वर्चस्व तथा महर्षि दयानंद के जन्म के 200 वर्ष व हिंदी के संवर्धन में उनके योगदान विषय पर व्याख्यान देंगे।

आर्य समाज की प्रेरणा से बिस्मिल बने क्रांतिकारी : डॉ0 जयेन्द्र

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

गाजियाबाद। आर्य समाज एवं आर्ष गुरुकुल नोएडा के तत्वावधान में मंगलवार को सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी अमर शहीद पं0 रामप्रसाद बिस्मिल के 127वें जन्मोत्सव पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ0 जयेन्द्र आचार्य ने कहा कि आर्य समाज की प्रेरणा से पं0 राम प्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी बने। वह सदैव युवाओ के प्रेरणा स्रोत रहेंगे। उनका व्यक्तित्व अद्भूत था वह क्रांतिकारियों के लिए भी प्रेरणा पुंज थे। उनके जन्मदिन पर हमें राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए, वह अछे गीतकार लेखक भी थे।

कार्यक्रम अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पं० रामप्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारियों के सिरमौर रहे, उनसे प्रेरणा पाकर अनेकों नौजवान स्वतंत्रता-आंदोलन में कूद पड़े। अशफाक उल्ला खां और बिस्मिल की दोस्ती जगजाहिर थी। एक कट्टर आर्य समाजी और एक कट्टर मुस्लिम, लेकिन राष्ट्र की बलिवेदी पर दोनों इकठ्ठे फांसी पर झूल गए।

बाहिना गायत्री मीना ने कहा कि बिस्मिल की जीवनी पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते है, वास्तव में उनके जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में पढ़ाने की आवश्यकता हैं। जिससे नयी पीढ़ी उनके बलिदान से परिचित हो सके।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि बिस्मिल के जीवन का कण कण राष्ट्र के लिए समर्पित था, उनका जीवन युवाओं के लिए सदैव प्रकाश पुंज का कार्य करेगा।

सुप्रसिद्ध गायिका संगीता आर्या गीत, सीमा आर्या, सुदर्शन चौधरी के ओजस्वी गीतों ने सभी मे उत्साह पैदा कर दिया।

इस दौरान स्वामी यज्ञमुनि, मधु भसीन, आचार्य महेन्द्र भाई, धर्मपाल आर्य, कुसुम भंडारी आदि मौजूद रहे।

15 जून से होगा यज्ञ तीर्थ गुधनी में भव्य यज्ञ महोत्सव

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गुधनी (बदायूं) उत्तर प्रदेश। **बिल्सी,** तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी में गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी 15 से 19 जून तक भव्य यज्ञ महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी कार्यक्रम के मुख्य संयोजक आचार्य संजीव रूप ने दी है।

मुख्य संयोजक व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक आचार्य संजीव रूप ने बताया कि इस अवसर पर 15 जून को 501 वृक्षों के साथ विशाल शोभायात्रा भी निकाली जाएगी।

18 जून को 51 कुंडीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूणार्हुति होगी । 19 जून को लगभग 20 हजार लोगों का भंडारा होगा।

इस अवसर पर 10 जून से आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा, जो निशुल्क होगा।

आचार्य रूप के अनुसार राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गृहस्थ सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन व कवि सम्मेलन के मुख्य आकर्षण होंगे।

आचार्य जी तथा आयोजन समिति ने श्रद्धालु जनों से इस महोत्सव में बड़ी संख्या में सहभागिता की अपील की है।

ओ३म्
महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरीका द्वारा आयोजित भव्यातिभव्य
अमरीका चलो
अमरीका चलो
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
न्यूयार्क, दिनांक 18-19-20-21 जुलाई 2024
सम्माननीय भाईयों और बहिनो!
भारत के सैकड़ों आर्यजन इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुँच रहे हैं। आप भी अपना रजिस्ट्रेशन शीघ्र ही करायें। इस अवसर पर जो यात्री अमरीका घूमना फिरना चाहते हैं उनके लिये दो प्रकार की यात्राओं का आयोजन किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका की यात्रा महंगी रहती है क्योंकि केवल एअर टिकिट का मूल्य ही लगभग एक लाख पच्चीस हजार चल रहा है।
प्रथम टूर - 5 रात्रि 6 दिन, व्यय-राशि 2,35,000/- रुपये
17 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्नलिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%
द्वितीय टूर - 7 रात्रि 8 दिन, व्यय-राशि 2,75,000/- रुपये
15 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
2 रात्रि नियाग्रा, 3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्न लिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%
उक्त यात्रा में जाने वाले सभी इच्छुक यात्रीगण शीघ्र ही 50,000/- (पचास हजार) का बैंक ड्राफ्ट Thomas Cook (India) Ltd. के नाम का बनवाकर निम्नलिखित पते पर भेजें।
न्यूयार्क आर्य महासम्मेलन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
टूर रजिस्ट्रेशन के लिये तथा यू.एस. वीजा के लिये कृपया
श्री संदीप आर्य से मो.नं. 9650183339 पर सम्पर्क करें
कृपया नोट करें: जो यात्री वीजा मिलने के बाद भी यदि टूर में नहीं जायेंगे उनकी 50,000/- की एडवांस राशि वापस नहीं होगी। एडवांस राशि केवल उन्हीं की वापस होगी जिन्हें यू.एस. वीजा नहीं मिलेगा।

देव भूमि हिमाचल प्रदेश प्राककृतिक संरचना का विशेष क्षेत्र है :- आचार्य सुफल (हांसी)

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

अदभुत प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण हिमाचल प्रदेश का क्षेत्र अपने आप में एक बहुत सुन्दर दर्शनीय स्थल है । 25 मई 2024 को प्रातः सवा 9 बजे गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर से गुरुकुल के प्रिंसिपल डॉ0 उदयनाचार्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वाती शर्मा (जो एक यूटूबर भी हैं) उनका बेटा चि0 यास्क गुरुकुल का एक सुयोग्य छात्र अभिषेक एवं मैं (आचार्य सुफल, हांसी राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता चण्डीगढ़) पांचों भ्रमण के लिए गुरुओं की धरती पंजाब से देव भूमि हिमाचल के लिए प्रस्थान किया । सर्व प्रथम पठानकोट रास्ते में मॉडल टाउन आर्य समाज के विद्वान धमार्चार्य साधूवाद के पात्र मान्यवर मोहनलाल शास्त्री ने जलपान व भोजनादि से सभी का उत्तम सम्मान किया । तत्पश्चात डलहौजी के पास एक होटल में ठहरे और थोड़ा विश्राम करने के बाद आर्य समाज डलहौजी के भवन में गये और गांधी चौक, नेता सुभाष चौक आदि बाजारों में भ्रमण किया । दूसरे दिन प्रातः 8 बजे सांचपास के लिए निकले, रास्ते में पहाड़ गिरने से रुकावट के कारण 2 घंटे रास्ता खुलने का इंतजार करना पड़ा । सांचपास के रास्ते में बर्फ बहुत है । 5-6 घंटे का सफर करने के बाद सांचपास से पहले तेज बर्फबारी के कारण खराब रास्ते में हमारी गाड़ी फंस गयी, जो बड़ी मुश्किल से निकली और फिर हम निराश होकर वापिस आ गए और अपने निर्धारित विश्राम स्थल पर रात्रि को 11बजे पहुंच गए । तीसरे दिन सुबह डलहौजी छावनी होते हुए खज्जियार पर्यटक स्थल का भ्रमण करके भरपूर आनन्द लिया । दोपहर बाद सवा 3 बजे चम्बा के लिए रवाना हुए , जहां बेसब्री से इन्तजार करते हुए गुरुकुल करतारपुर के प्राध्यापक सुरेश शास्त्री ने प्रथम सुल्तानपुर चौक चम्बा में तहे दिल से सुस्वागत किया और सम्मानपूर्वक अपने घर ले गये और श्रद्धा व प्रेम सहित भोजन करवाया । इसके आगे का रास्ता रावी नदी के किनारे से होते हुए दयानन्द मठ चम्बा के संचालक आचार्य महावीर शास्त्री से औपचारिक भेंट की । आगे की यात्रा अध्यापक सुरेश शास्त्री के साथ बहुत ऊंची पहाड़ी जुम्हार पहुंचे जहां विमला होटल में दो रात्रि विश्राम किया । पांचवें दिन सुबह दयानन्द मठ चम्बा के लिए रवाना हुए जहां रास्ते में प्राचीन चामुण्डा माता मन्दिर के दर्शन किये । चम्बा नगर में थोड़ा बहुत भ्रमण किया और दयानन्द मठ में रात्रि विश्राम किया । प्रातः काल छठे दिन स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती के आत्म प्रज्ञा साधना आश्रम बाघनी (नूरपुर) के लिए प्रस्थान किया । वहां रात्रि विश्राम करने के बाद सातवें दिन की यात्रा स्वामी सदानन्द महाराज के आश्रम दयानन्द मठ दीनानगर के लिए की । सप्त दिवसीय सुखद यात्रा के लिए परम पिता परमात्मा का कोटि कोटि धन्यवाद करते हुए ग्रीष्मकालीन अवकाश में निरन्तर मौन साधना करने के लिए विचार विमर्श किया ।

अमर शहीद महान बलिदानी- बंदा बैरागी

(पुण्यतिथि 9 जून पर शत शत नमन)

9 जून अमर शहीद बन्दा बैरागी का बलिदान दिवस है। आज कितने युवाओं ने उनके अमर बलिदान की गाथा सुनी है? बहुत कम। क्यूंकि वामपंथियों द्वारा लिखे गए पाठयक्रम में कहीं भी बंदा बैरागी का भूल से भी नाम लेना उनके लिए अपराध के समान है। फिर क्या वीर बन्दा वैरागी का बलिदान व्यर्थ जाएगा ? क्या हमारा समाज समय रहते जाग पाएगा ? क्या आर्य हिन्दू जाति अपने पूर्वजों का ऋण उतारने के लिये संकल्पित होगी ? इस लेख के माध्यम से वीर बंदा बैरागी के अमर बलिदान की गाथा प्रस्तुत है।

बन्दा बैरागी का जन्म 27 अक्तूबर, 1670 को ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी पर तीर चला दिया। इससे उसके पेट से एक शिशु निकला और तड़पकर वहीं मर गया। यह देखकर उनका मन खिन्न हो गया। उन्होंने अपना नाम माधोदास रख लिया और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिये। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे।

इसी दौरान गुरु गोविन्दसिंह जी माधोदास की कुटिया में आये। उनके चारों पुत्र बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़कर देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा। इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गुरुजी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। फिर पाँच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा।

बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिये। उन्होंने सबसे पहले श्री

गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी।

उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से 17 दिसम्बर, 1715 को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्दकर, हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख भी कैद किये गये थे। इनमें बन्दा के वे 740 साथी भी थे, जो प्रारम्भ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाए सिखों के सिर काटकर उन्हें भाले की नोक पर टाँगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा बैरागी का माँस नोचा जाता रहा।

काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा; पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में आज जहाँ हार्डिंग लाइब्रेरी है,वहाँ 7 मार्च, 1716 से प्रतिदिन सौ वीरों की हत्या की जाने लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा - तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किये, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है ?

बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया - मैं तो प्रजा के पीड़ितों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था। क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है।

बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं ? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता; क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है। यह सुनकर सब ओर सन्नाटा छा गया। भयभीत करने के लिए उनके पाँच वर्षीय पुत्र अजय सिंह को उनकी गोद में लेटाकर बन्दा के हाथ में छुरा देकर उसको मारने को कहा गया।

बन्दा ने इससे इन्कार कर दिया। इस पर जल्लाद ने उस बच्चे के दो टुकड़ेकर उसके दिल का माँस बन्दा के मुँह में ठूँस दिया; पर वे तो इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। गरम चिमटों से माँस नोचे जाने के कारण उनके शरीर में केवल हड्डियाँ शेष थी। फिर 9 जून, 1716 को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिये।

बंदा बैरागी जैसे महान वीरों ने हमारे धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। खेदजनक बात यह है कि उनकी बलिदान से आज की हमारी युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। यह एक सुनियोजित षड़यंत्र है कि जिन जिन महापुरुषों से हम प्रेरणा ले सकें, उनके नाम तक विस्मृत कर दिए जाएं।

प्रस्तुति : डॉ. युक्ति रुस्तगी
के. एम. सी., मैंगलोर

विशाल ऐतिहासिक आर्य समारोह यूनाइटेड किंगडम के ...

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रमुखतः प्रो. महावीर अग्रवाल, प्रो वाइस चांसलर पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार, प्रो. वीरेन्द्र कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, आचार्य डॉ चन्द्र शेखर दिल्ली , श्री मोहन शास्त्री, तेयाप बिहार, श्री रामनरेश कुमार, चंडीगढ़, रमेश शास्त्री आदि साथ अनेक विद्वानों अंकित थे । भारत के कई प्रान्तों से शुभकामना विडियो देखे गये ।

बोर्ड आफ ट्रस्ट -१. संरक्षक- श्री कृष्ण चोपड़ा ,२.धमार्चार्य आचार्य डॉ उमेश यादव ३. प्रधान -श्री रविन्द्र रेणुकूंटा , ४. मंत्री डॉ मोना खुराना ५. कोषाध्यक्ष श्री विनोद गुलाटी एवं अन्य ट्रस्टी गण डॉ उमेश कुमार कथूरिया, श्री परिमल सोमानी, श्री विजय कुमार हर्ष तथा बिमला सौंद सबके परस्पर उत्तम संगठन से यह कार्य क्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा ।

संस्था के कार्यालय प्रबन्धक मिस राजी चौहान के साथ अनेक सेवादल प्रमुख कार्यरत थे जिसमें लगभग १०० सेवक संयुक्त रुप से विभिन्न विभागों को सम्भालने में क्रियाशील थे । यज्ञ आदि में डा रोशन बुझियावन, निशान्त सैनी, गौरव गोयल आदि तमाम युवक लगे रहे

ऋषि भोज की उत्तम व्यवस्था थी ।।

कुल मिलाकर यह कार्य क्रम पूर्णतः सफल और आज के सन्दर्भ में यूनाइटेड किंगडम के मध्य भागीय बर्मिंघम शहर में सार्थक रहा ।

यह कहना कोई अतिशयता नहीं होगी कि जालन्धर, चंडीगढ़ और हिसार में कार्य करके बर्मिंघम में नियुक्त विद्वान् आचार्य डॉ उमेश यादव मिनिस्टर आफ रेलिजन, आर्य समाज वैदिक मिशन वेस्ट मिडलैंड्स की इस सम्पूर्ण कार्य में विशेष प्रेरणादायक प्रयास पुरुषार्थ रहा है ।

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
के सानिध्य में
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, हापुड़, गाजियाबाद, मेरठ
के संयुक्त तत्वाधान में
वैदिक योग साधना शिविर
(पूर्णतया आवासिय)
स्थान :- महात्मा नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला (नैनिताल)
दिनांक :- 16, 17 व 18 जून 2024

प्रतिदिन कार्यक्रम

प्रात :	6 से 7 बजे	व्यायाम व प्राणायाम
प्रात :	8 से 9 बजे	यज्ञ
प्रात :	9 बजे	अल्पाहार
अपराह्न :	10 से 12 बजे	भजन व प्रवचन
दोपहर :	12:30 बजे	भोजन
मध्याह्न :	3 से 5 बजे	भजन व प्रवचन
सांय :	6 बजे	संध्या व ध्यान
सांय :	7 बजे	भोजन
रात्री :	8 बजे	सामुहिक भ्रमण व भजन

1) शिविर में प्रति व्यक्ति भोजन व्यवस्था की सहयोग राशि ₹1200 रहेगी।
2) जिन व्यक्तियों को होटल की व्यवस्था करनी है वह होटल हिल क्रिस्ट के लिऐं रोहित जी से 9012481779 संपर्क कर सकते हैं।
3) शिविर के समय कोई भी व्यक्ति बाहर घूमने नहीं जाएगा, प्रत्येक शिविरार्थी को शिविर में ही रहना अनिवार्य होगा।
4) सभी का सहयोग आपेक्षित है। सभी को स्वम अनुशासन का पालन करना होगा।
5) पूर्णलाभ लेने के लिऐ 15 जून 2024 को सांयकाल तक अवश्य पहुंचे।
6) अपने साथ बिछाने की चादर एवं ओढ़ने के लिऐ गर्म वस्त्र ले कर आवे।

आप सभी से निवेदन है कि परिवार (पुरूष, महिला, बच्चे) के साथ शिविर में उत्साह पूर्ण भाग लेकर शारिरिक–मानसिक–अध्यात्मिक उन्नति करें।

श्री देवेंद्र पाल वर्मा, अध्यक्ष
श्री पंकज जायसवाल, मंत्री
श्री अरविंद गर्ग, कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

विशेष आमंत्रित :- श्री स्वामी अखिलानंद जी (पूठ), श्री आनन्द आर्य जी (हापुड़), श्री प्रभात जी (रुद्रपुर)
विशेष सहयोगी :- श्री संदीप मुनि जी, श्री भिक्कन सिंह नेगी जी, (रामगढ तल्ला)
संयोजक :- श्री अशोक कुमार आर्य (पिलखुवा)
सह संयोजक :- सर्व श्री सुभाष चंद आर्य, रविन्द्र उत्साही (पिलखुवा), पवन कुमार आर्य (हापुड़)
दिनेश कुमार आर्य (पूठ), रामपाल आर्य, संजय रस्तौगी (मेरठ), सतवीर चौधरी (गाजियाबाद)
सम्पर्क सुत्र :- 7017586077, 9759477410, 9837096544

21 जून को आयोजित होगा दशम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

15 जून 2024 से 21 जून 2024 तक मनाया जायेगा योग सप्ताह, जिला मुख्यालय तहसील ब्लॉक नगर निकाय ग्राम पंचायतों में होगा सामूहिक योगाभ्यास , जिला अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर दिया आवश्यक दिशा निर्देश

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

अमरोहा। आज जिलाधिकारी श्री राजेश कुमार त्यागी जी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में दिनांक 15 जून 2024 से 21 जून 2024 तक जनपद में योग सप्ताह आयोजित किए जाने के दृष्टिगत अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व सहित अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर कार्य योजना पर बिस्तर चर्चा कर

आवश्यक दिशा निर्देश दिया । जिलाधिकारी ने कहा कि आयुष मंत्रालय भारत सरकार के निर्देश के अनुसार इस वर्ष दशम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 को आयोजित होगा इसके साथ ही 15 जून 2024 से 21 जून 2024 तक योग सप्ताह अलग-अलग तिथियां में आयोजित कर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे ।जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा कि योग कार्यक्रम जनपद के समस्त ग्राम पंचायत नगर निकाय जनपद मुख्यालय तहसील ब्लाक में वृहद स्तर पर भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा इसके लिए आयुष विभाग पहले से तैयारी कर ले । कार्यक्रम के अनुसार 15 जून 2024 को प्रातः 6 से 7:00 बजे तक सामूहिक योगाभ्यास किया जाएगा । 16 जून 2024 को रंगोली प्रतियोगिता योग के माध्यम से उच्च रक्तचाप प्रबंधन विषय पर सेमिनार और गोष्ठी, इसी प्रकार 17 जून 2024 को स्लोगन प्रतियोगिता जीवन शैली जन समस्याओं में योग का महत्व विषय पर सेमिनार गोष्ठी ,18 6.24 को निबंध लेखन प्रतियोगिता आधुनिक जीवन शैली में महिलाओं के लिए योग का महत्व विषय पर सेमिनार गोष्ठी 19 जून 2024 को आशु भाषण एवं ड्राइंग प्रतियोगिता , 20 जून 2024 को मानसिक स्वास्थ्य योग एक संपूर्ण विकल्प विषय पर सेमिनार गोष्ठी योगासन प्रदर्शन प्रतियोगिता, साथ ही 21 जून 2024 को निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार ब्रह्द स्तर पर राजकीय मिनी स्टेडियम में सामूहिक योगाभ्यास व पुरस्कार वितरण एवं समापन कार्यक्रम किया जाएगा । जिलाधिकारी ने कहा कि आयुष विभाग अधिक से अधिक लोगों को इस योग अभ्यास के लिए जोड़े अधिकारी कर्मचारी जनप्रतिनिधि शिक्षक समाजसेवी सहित अन्य व्यक्तियों की सहभागिता सुनिश्चित करायी जाए। तैयारी समय से हो जाए कार्यक्रम में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं की जानी चाहिये। बैठक के अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व श्री सुरेंद्र सिंह उप जिलाधिकारी पुष्कर नाथ जी उप जिलाधिकारी मसीह जी उप जिलाधिकारी सुनीता सिंह जिला विद्यालय निरीक्षक सहित अन्य संबंधित अधिकारी व आयुष विभाग के अधिकारी व डॉक्टर मौजूद रहे ।

कानून का पालन सर्वोपरिराष्ट्रभक्ति : अगरपाल

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

बिल्सी, यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित आर्य समाज मंदिर में साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया गया । अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप के पुत्र पं प्रश्रय आर्य व पुत्री कुमारी तृप्ति शास्त्री ने यज्ञ कराया तथा भजन गाए । आर्य समाज के मंत्री मास्टर अगरपाल सिंह ने कहा "कि जो लोग कानून का पालन करते हैं वे सच्चे राष्ट्र भक्त होते हैं । राष्ट्र प्रथम होता है । प्रश्रय आर्य ने भजन गाते हुए कहा *मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज के नियम कायदे होते ही हैं, हमें सदा सही काम करना चाहिए । इस अवसर पर साहब सिंह, मनोज कुमार, राकेश आर्य, पंजाब सिंह,विनीत कुमार सिंह, कुमारी तानिया , मास्टर साहब सिंह, मोना आर्य तथा आर्य संस्कारशाला के बच्चे मौजूद रहे

यज्ञ महोत्सव 2024

यज्ञ तीर्थ गुधनी बदायूं उ प्र

आमन्त्रण/ आभार

युग महोत्सव 2024 के लिए आपने जो सहयोग दिया उसके लिए हम आपके आभारी हैं और निवेदन करते हैं कि 15 से 19 जून तक चलने वाले यज्ञ महोत्सव में आप अवश्य पधारेंगे ।

आचार्य संजीव रूप

निर्देशक : यज्ञ महोत्सव
एवं समस्त आर्य समाज परिवार

दान हेतु : बैंक नाम - पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक - 6154000100028265
IFSC--PUNB0615400
Google Pay, Paytm - 9997386782

धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन निमंत्रण

परमपिता परमात्मा की अपार कृपा से राष्ट्रीय शिविर एमिटी कैम्पस नोएडा में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ कहम आपके सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं कि अब आगामी श्रृंखला में रविवार 1 सितंबर 2024 को प्रात: 9 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली में "राष्ट्रीय आर्य बुध्दिजीवी सम्मेलन " का आयोजन किया जा रहा है

कृपया अपनी डायरी में नोट कर ले और साथियो सहित पहुचने का कार्यक्रम बना ले ।

कार्यक्रम के पश्चात "ऋषि लंगर" की सुन्दर व्यवस्था रहेगी।

परिषद के कार्यक्रमों को सुचारु रुप से चलाने के लिए अपना योगदान प्रदान करेः-

Bank Details:-"KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD"
A/No. 10205148690. IFSC Code.SBIN0001280. SBI,Clock Tower Delhi-110007.
Gogle Pay at :- 98680 51444

संयोजक - अनिल आर्य (मो 9810117464)

के0ए0(पी0जी0)कालेज, कासगंज-207123

(सम्बद्ध-राजा महेन्द्र प्रताप सिंह राज्य विश्वविद्यालय, अलीगढ़)

आवश्यकता है

स्ववित पोषित व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित निम्नांकित विषयों में उनके नाम के सम्मुख कोष्ठक में अंकित पदों हेतु यू0जी0सी0/विश्वविद्यालय योग्यताधारी अर्ह अभ्यर्थियों से उत्तर प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित वेतनक्रम में प्रवक्ता पद हेतु आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं।

स्नातकोत्तर वाणिज्य संकाय- 02 पद
स्नातक/स्नातकोत्तर विज्ञान संकाय- रसायन विज्ञान 01,जन्तु विज्ञान 01, वनस्पति विज्ञान 01, भौतिक विज्ञान 01 गणित 01,कम्प्यूटर सांइन्स,01

इच्छुक अभ्यर्थी सचिव/प्राचार्य, के0ए0(पी0जी0) कालेज, कासगंज के नाम अपने समस्त शैक्षिक प्रमाण-पत्रों आधारकार्ड की स्वप्रमाणित छाया प्रतियों व बायोडेटा पासपोर्ट साइज फोटो सहित इस विज्ञापन की तिथि से 21 दिन के अन्दर पंजीकृत डाक से आवेदन कर सकते हैं। सीधे आवेदन मान्य न होंगे।

प्रो0 अशोक कुमार रूस्तगी
प्राचार्य

विनय कुमार जैन
सचिव

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी कार्यालय को एक लिपिक तथा चपरासी की

आर्यावर्त केसरी कार्यालय को एक लिपिक तथा चपरासी की तुरंत आवश्यकता है। लिपिक पद हेतु कंप्यूटर की जानकारी रखने वाले को वरीयता दी जाएगी।

वेतन योग्यता व कार्य क्षमतानुसार।
इच्छुक अभ्यर्थी तुरंत संपर्क करें

डॉ. अशोक कुमार रूस्तगी, संपादक

आर्यावर्त केसरी कार्यालय, आर्यावर्त प्रिंटर्स, गोकुल बिहार
(बेरियान) अमरोहा-244221 (उत्तर प्रदेश)
मोबा. 94121 39333, 86308 22099

"राष्ट्र आराधन की वैदिक दृष्टि" विषय पर गोष्ठी संपन्न

राष्ट्र ज्ञान,चरित्र आचार से बनता है -डॉ.रामचन्द्र

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

कुरुक्षेत्र। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में "राष्ट्र आराधन की वैदिक दृष्टि" विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। वैदिक प्रवक्ता डॉ. रामचन्द्र (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड एंड ऑनर्स स्टडीज के संस्कृत विभागाध्यक्ष) ने कहा कि वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के आदि स्रोत हैं।वेद और दर्शन,उपनिषद, वेदांग,उपांग और मनुस्मृति, रामायण तथा महाभारत आदि ग्रंथों में ज्ञान का महासागर छिपा हुआ है।प्राचीन काल में भारत को आर्यावर्त के रूप में संबोधित किया जाता था।मनुस्मृति आदि सभी प्राचीन ग्रंथ में बहुत बार आर्यावर्त शब्द का प्रयोग आता है।राष्ट्र शब्द संस्कृत की राज् धातु से बनता है जिसका अर्थ होता है सदैव प्रकाशमान।राष्ट्र बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं से नहीं बनता है अपितु उसका निर्माण होता है वहां के नागरिकों के ज्ञान,चरित्र एवं आचार परंपरा से।मनुस्मृति में कहा गया है कि पृथ्वी के समस्त देशों के मानव भारत भूमि के ऋषियों से चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।राष्ट्र आराधन की पहली वैदिक दृष्टि यह है कि वहां के नागरिक अपने देश को प्रथम रखें और उनका संकल्प हो कि उनके किसी भी आचरण से राष्ट्रीय गौरव का हनन न हो।अथर्ववेद में पृथ्वी को मां के रूप में संबोधित किया गया है।जब नागरिक राष्ट्र को केवल भूखंड के रूप में न देखकर मां के रूप में देखेगा तो वह अपने प्रत्येक आचरण से राष्ट्रीय गौरव को बढाने का कार्य करेगा।वैदिक काल में गुरुकुल के आचार्य बाल्यावस्था में ही ब्रहमचारीयों को राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत कर देते थे।रामायण में लंका पर विजय के बाद राम यह कहकर सोने की लंका का त्याग कर देते हैं कि जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है और मुझे लंका से कोई भी मोह नहीं है।आज जब बडी संख्या में हमारे देश के युवाओं का पलायन विदेशों की ओर हो रहा है तो निश्चित रूप से यह चिंता का विषय है।उन्होंने कहा कि वेद एवं वैदिक शास्त्रों के स्वाध्याय तथा वैदिक शिक्षा परम्परा को अपना कर ही हम राष्ट्रभक्त नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। मुख्य अतिथि एडवोकेट शशि पाराशर एवं अध्यक्ष सोहन लाल आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता,रजनी गर्ग,कौशल्या अरोड़ा, कमला हंस,जनक अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

---------ईश्वर---------

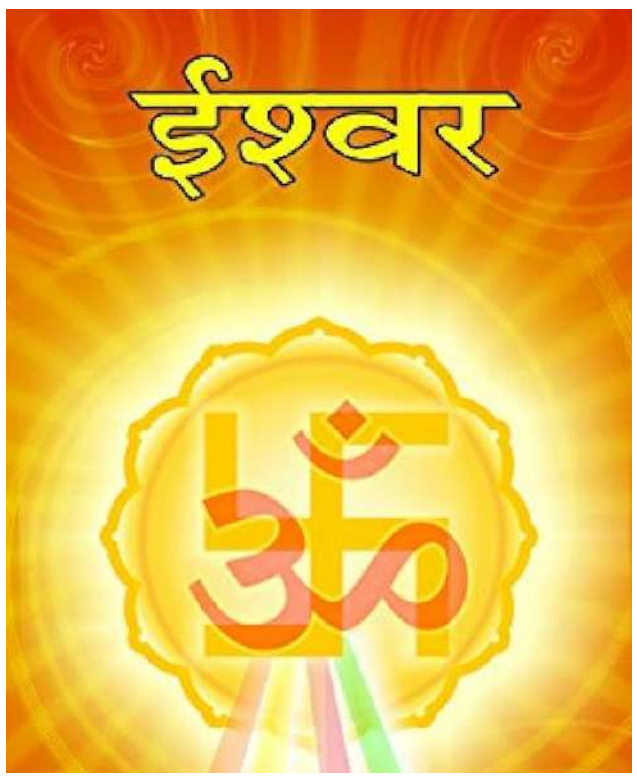

प्र. 1: ईश्वर का मुख्य नाम क्या है ?

उत्तर: ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है।

प्र. 2: ईश्वर के कुल कितने नाम हैं ?

उत्तर: ईश्वर के असंख्य नाम हैं।

प्र. 3: ईश्वर के नामों से हमें क्या पता चलता है ?

उत्तर: ईश्वर के नामों से हमें उसके गुण, कर्म और स्वभाव का पता चलता है।

प्र. 4: ईश्वर एक है या अनेक ?

उत्तर: ईश्वर एक ही है उसके नाम अनेक हैं।

प्र. 5: क्या ईश्वर कभी जन्म लेता है ?

उत्तर: नहीं, ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता। वह अजन्मा है।

प्र. 6: स्तुति, प्रार्थना, उपासना किसकी करनी चाहिए?

उत्तर: स्तुति, प्रार्थना, उपासना केवल ईश्वर की ही करनी चाहिए।

प्र. 7: ईश्वर से अधिक सामर्थ्यशाली कौन है ?

उत्तर: ईश्वर से अधिक सामर्थ्यशाली और कोई नहीं है। वह सर्वशक्तिमान है।

प्र. 8: इन्द्र नाम किसका है ?

उत्तर: जिसमें सबसे अधिक ऐश्वर्य होता है उसे इन्द्र कहते हैं अर्थात इन्द्र ईश्वर का नाम है।

प्र. 9: दुःख कितने प्रकार के और कौन-कौन से होते हैं ?

उत्तर: दुःख तीन प्रकार के होते हैं - (1) आध्यात्मिक, (2) आधिभौतिक, (3) आधिदैविक दुःख।

प्र. 10: आध्यात्मिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर: अविद्या, राग-द्वेष, रोग इत्यादि से होने वाले दुःख को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं।

प्र. 11: आधिभौतिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर: मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, मक्खी-मच्छर, सांप इत्यादि से होने वाले दुःख को आधिभौतिक दुःख कहते हैं।

प्र. 12: आधिदैविक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर: अधिक सर्दी-गर्मी-वर्षा, भूख-प्यास, मन की अशान्ति से होने वाले दुःख को आधिदैविक दुःख कहते हैं।

प्र. 13: ईश्वर के कोई दस नाम बताइए।

उत्तर: (1) विष्णु, (2) वरुण, (3) परमात्मा, (4) पिता, (5) ब्रह्मा, (6) महादेव, (7) महेश, (8) सरस्वती, (9) शिव, (10) गणेश।

यह नाम ईश्वर के गुणवाचक हैं इन नामों के चित्र नहीं बन सकते।

प्र. 14: ईश्वर के तीन गुण बताइए।

उत्तर: ईश्वर के तीन गुण हैं - न्याय, दया और ज्ञान।

प्र. 15: ईश्वर के तीन कर्म बताइए।

उत्तर (1) ईश्वर संसार को बनाता है।

(2) ईश्वर वेदों का उपदेश करता है।

(3) ईश्वर कर्मों का फल देता है।

प्र. 16: अनन्त का अर्थ क्या है ?

उत्तर: जिसका कभी अन्त नहीं होता उसे अनन्त कहते हैं। ईश्वर अनन्त है।

प्र. 17: क्या गणेश ईश्वर का नाम है? क्यों ?

उत्तर: हाँ, क्योंकि वह पूरे संसार का स्वामी है और सबका पालन करता है।

प्र. 18: सरस्वती से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर सरस्वती ईश्वर का एक नाम है। संसार का पूर्ण ज्ञान जिसे होता है, उसे सरस्वती कहते हैं।

प्र. 19: ईश्वर को निराकार क्यों कहते हैं ?

उत्तर: ईश्वर का कोई आकार, रुप, रंग, मूर्ति नहीं है। अतः उसे निराकार कहते हैं ।

प्र. 20: क्या राहु और केतु ग्रहों के नाम हैं।

उत्तर: नहीं, इस नाम के कोई ग्रह नहीं होते। ये दोनों नाम ईश्वर के हैं।

प्र. 21: ईश्वर के किन्हीं दो नामों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर (क) ब्रह्मा - ईश्वर जगत् को बनाता है इसलिए उसे ब्रह्मा कहते हैं।

(ख) शुद्ध - राग-द्वेष, छल-कपट, झूठ इत्यादि समस्त बुराइयों से वह दूर है। उसका स्वभाव पवित्र है।

प्र. 22: सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ की रचना किसने की थी ?

उत्तर: सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ की रचना महर्षि दयानन्द ने की थी।

आर्य समाज के दस सिद्धांत

1-ईश्वर समस्त सच्चे ज्ञान (विज्ञान) और उसके माध्यम से जो कुछ जाना जा सकता है, उसका मूल कारण है।

2-ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है, वह निराकार है, सर्वज्ञ है, न्यायकारी है, दयालु है, अजन्मा है, अनन्त है, अपरिवर्तनशील है, अनादि है, अद्वितीय है, सबका आधार है, सबका स्वामी है, सर्वव्यापी है, सर्वव्यापक है, अमर है, निर्भय है, नित्य है, पवित्र है, सबका रचयिता है। केवल वही पूजनीय है।

3-वेद सत्य ज्ञान के ग्रन्थ हैं। सभी आर्यों का कर्तव्य है कि वे इन्हें पढ़ें, पढ़ाएं, पढ़ते हुए सुनें और दूसरों को सुनाएं।

4-हमें सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

5-सभी कार्य धमार्नुसार करने चाहिए, अर्थात यह विचार करने के बाद कि क्या सही है और क्या गलत।

6-आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य विश्व का उपकार करना है, अर्थात सभी का शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक कल्याण करना।

7-सभी के प्रति हमारा आचरण प्रेम, धार्मिकता और न्याय से निर्देशित होना चाहिए।

8-हमारा लक्ष्य अज्ञानता को दूर करना और ज्ञान को बढ़ावा देना होना चाहिए।

9-व्यक्ति को न केवल अपने कल्याण से संतुष्ट रहना चाहिए, बल्कि दूसरों के कल्याण की भी आशा करनी चाहिए।

10-सभी के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए बनाए गए समाज के नियमों का पालन करने के लिए व्यक्ति को स्वयं को प्रतिबन्धित समझना चाहिए, जबकि व्यक्तिगत कल्याण के नियमों का पालन करने में सभी को स्वतंत्र होना चाहिए।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ...प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी ..प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333, 87552 68578

योगासन एवं प्राणायाम

सुप्त पवन मुक्तासन

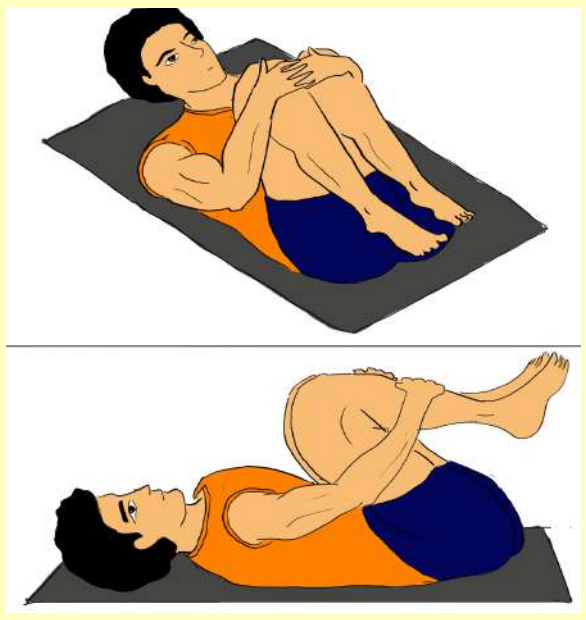

नामकरण-

सुप्त पवन मुक्तासन से आशय ऐसे आसन से है जिससे पवन (वायु, हवा या वात) मुक्त हो जाये या छूट जाये। यह कुछ प्रसुप्त (डॉर्मेन्ट) अवस्था में किये जाने के कारण सुप्त पवनमुक्तासन (सुप्त+पवन+मुक्त+आसन) के नाम से जाना जाता है।

अभ्यास विधि-

इसे करने की विधि प्रायः पवनमुक्तासन की तरह से ही है। अंतर केवल इतना है कि इसमें सिर को उठाकर नासिका घुटनों से नहीं लगाते। सिर को जमीन पर ही रहने देंगे तथा घुटनों से छाती पर दबाब बनाते हैं

लाभ-

1. इससे होने वाले लाभ पवनमुक्तासन जैसे ही हैं।
2. इस आसन को सर्वाइकल स्पोंडोलाइटिस व कमर दर्द वालों को करने से दर्द में लाभ मिलता है।

तभी होगा आपका जीवन सफल

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

"संसार में दो प्रकार के लोग दिखाई देते हैं। एक सुलझे हुए, और दूसरे उलझे हुए।"

"जो लोग सुलझे हुए दिखाई देते हैं, वे कोई जन्म से सुलझे हुए नहीं होते। वे भी अपने अंदर वर्षों तक उलझते रहते हैं। समस्याओं से संघर्ष करते रहते हैं। प्रश्नों के समाधान ढूंढते रहते हैं।" "यदि उनमें पूर्वजन्मों के उत्तम संस्कार हों, तो वे पूर्वजन्म के उत्तम संस्कारों के कारण कुछ प्रश्नों का समाधान अपने अंदर से स्वयं निकाल लेते हैं। परंतु सारी समस्याओं का समाधान वे भी नहीं ढूंढ पाते।"

कुछ समस्याओं का समाधान वे अपने माता-पिता और गुरुजनों से प्राप्त करते हैं। कुछ नई नई बातें उनके पुरुषार्थ के अनुसार ईश्वर की ओर से भी उनको अंदर से प्राप्त होती रहती हैं। "यदि उनके पूर्वजन्मों के संस्कार अच्छे हों, उनमें ईमानदारी सच्चाई सत्यग्राहिता सभ्यता नम्रता और जिज्ञासा भाव हो, तो वे अपने माता-पिता तथा गुरुजनों से बहुत

शीघ्र एवं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेते हैं। तथा वे इन्हीं गुणों के कारण ईश्वर से भी लाभ प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार से वे वर्षों तक अपने प्रश्नों को अंदर ही अंदर सुलझाते रहते हैं। तब जाकर वे संसार के लोगों को सुलझे हुए व्यक्ति दिखाई देते हैं।"

"परंतु जो लोग पूर्व जन्म के उत्तम संस्कारवान नहीं होते और वर्तमान में भी माता-पिता एवं गुरुजनों से तथा ईश्वर से कोई लाभ नहीं उठाते, जिनमें सत्यग्राहिता जिज्ञासा आदि गुण नहीं होते, हठी दुराग्रही लोभी क्रोधी इत्यादि खराब संस्कारों वाले होते हैं, वे स्वयं तो जीवन भर उलझे ही रहते हैं, साथ ही साथ दूसरों को भी उलझाते रहते हैं। ऐसे लोग स्वयं तो दुखी रहते ही हैं, साथ में दूसरों को भी दुख देते रहते हैं।"

"इसलिए यदि आपके भी पूर्व जन्मों के संस्कार अच्छे हों, आप में सेवा सभ्यता नम्रता जिज्ञासा सत्यग्राहिता आदि गुण हों, तो आप भी ऊपर बताई विधि से अपने प्रश्नों को सुलझाते रहें। कुछ लंबे समय के बाद आप स्वयं भी एक सुलझे हुए व्यक्ति कहलाएंगे। स्वयं सुखी रहेंगे और दूसरों को भी सुख देंगे। और तभी आपका जीवन सफल होगा।"

**"स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक,
निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात।"**

सप्तपदी

'सनातन धर्म मे विवाह के समय पति और पत्नी मिलकर सातवचन बोलते हैं। इसे सप्तपदी कहते हैं।

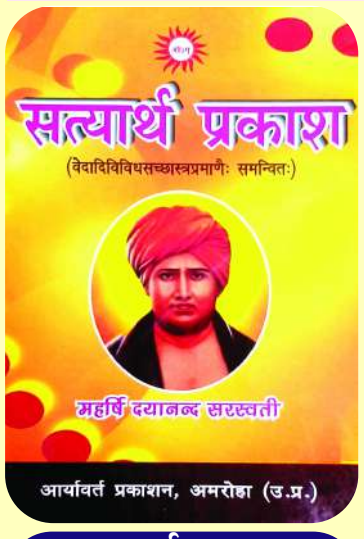

इन संस्कृत वाक्यों मे पति पत्नी से कहता है -

ओम इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 1।।

हे देवि ! तुम संपत्ति तथा ऐश्वर्य और दैनिक खाद्य और पेय वस्तुओं की प्राप्ति के लिए पहला पग बढ़ाओ , सदा मेरे अनूकूल गति करने वाली रहो। सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।

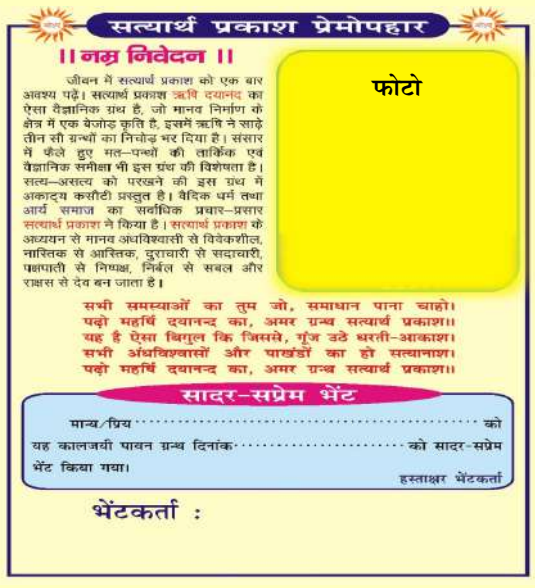

ओम ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 2 ।।

हे देवी ! तुम त्रिविध बल तथा पराक्रम की प्राप्ति के लिए दूसरा पग बढ़ाओ । सदा मेरे अनूकूल गति करने वाली रहो। सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें...

ओम रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 3 ।।

-हे देवि ! धन संपत्ति की वृद्धि के लिए तुम तीसरा पग बढ़ाओ ,सदा मेरे अनूकूल गति करने वाली रहो। सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।।

ओम मयोभवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 4।।

हे देवि ! तुम आरोग्य शरीर और सुखलाभवर्धक धन संपत्ति के भोग की शक्ति के लिए चौथा पग आगे बढ़ाओ और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।।

ओम पशुभ्यो: पंचपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 5 ।।

हे देवि ! तुम पशुओं ,(गाय घोड़ा) के पालन और रक्षा के लिए पांचवा पग आगे बढ़ाओ और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।।

ओम ऋतुभ्य षट्पदी भव सा मामुनव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 6 ।।

हे देवि ! तुम 6 ऋतुओं के अनुसार यज्ञ आदि और विभिन्न पर्व मनाने के लिए और ऋतुओं के अनुकूल खान पान के लिए छठा पग आगे बढ़ाओ और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।।

ओम सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते संतु जरदष्टयः ।। 7 ।।

हे देवि ! जीवन का सच्चा साथी बनने के लिए तुम सातवां पग आगे बढ़ाओ और सदा मेरे अनुकूल गति करने वाली रहो सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें इस व्रत में दृढ़ करें और तुम्हें श्रेष्ठ संतान से युक्त करें जो बुढापे में हमारा सहारा बनें ।।

- डॉ. विवेक आर्य

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया! सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु **वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/-** अथवा **आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/-** निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी खाता संख्या : 30404724002 IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग

राशि जमा करने के उपरांत मो. नं. 9412139333 अथवा 7017448224 पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके जन्म - दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद शुभाकांक्षी- कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर, सुशील, गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या, कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष, संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता।
सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

****

लड़की जन्म 08-04-1988 ऊँचाई, 5'3'' रंग-गोरा श्याम वर्ण, शिक्षा एम.ए. (इंग्लिश) बी.एड. वर्तमान में चन्दा देवी इण्टर कालेज आगरा प्राइवेट स्कूल में पीजटी। मूल निवासी आगरा। गोत्र : कश्यप ब्राह्मण, सौम्य सुशील। सम्पर्क सूत्र : एस.पी. चटर्जी, प्लाट नं0 89, पुष्पांजलि, लक्ष्मी पैलेस, फेज-प्रथम, देवरी रोड बुंदू कत्र आगरा-282001 मो0 9149374841

वधू चाहिए

उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ निवासी प्रतिष्ठित आर्य परिवार के 27 वर्षीय युवक लम्बाई 57 योग्यता बी.एस सी., बी.एड. अच्छी आय , शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान कायस्थ वर्णस्थ युवक हेतु सुशिक्षित, सुन्दर, योग्य, गृहकार्य में दक्ष, संस्कारवान, सुसंस्कृत आर्य परिवार की कन्या चाहिए । आर्य समाजी होने पर जाति बंधन नहीं ।
संपर्क सूत्र : 9997386782

****

बीसा अग्रवाल, प्रतिष्ठित आर्यसमाजी परिवार, के युवक जन्मतिथि 14.03.1989 / 05' 8/ बी. ए., एलएलबी., निजी मकान दूकान एवं स्कूल हेतु संस्कारवान आर्य परिवार की शिक्षित वधू चाहिये।
दहेज रहित विवाह।
मेरिज ब्यूरो वाले क्षमा करे।
सम्पर्क सूत्र : 9927512895, 9411909503, 8630138460

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
साहित्य सम्पादक
बृजेन्द्र सिंह 'वत्स'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail : aryawartkesari@gmail.com

ओ३म्

Kendriya Arya Yuvak Parishad
Organizing

Special Holidays Package for Arya Samaj

For Booking Contact

Mr. A K Arya +91 9868051444 | Mr. DK Bhagat +91 99588 89970

Travel Date
20th to 26th June
Booking Open Till 30-April 2024

SPECIAL ARRANGEMENTS FOR SENIOR CITIZENS

Chalo
BHUTAN
World's Most Beautiful Country

INCLUSION:
- ✓ Return Economy Class Airfare from Delhi
- ✓ 02 Night Thimphu in 03 Star Hotel
- ✓ 02 Night Punakha in 03 Star Hotel
- ✓ 02 Night Paro in 03 Star Hotel
- ✓ Veg Breakfast
- ✓ Tour Guide for entire tour
- ✓ Processing and approval permit
- ✓ Sightseeing
- ✓ All Tour and Transfer on Private Basis

INR 67,700 PP

Special offer for children
(Between 05 to 12 Years)
INR 46,500 PER CHILD

Add On:
- ✓ Exclusive prices for 6 Dinners ₹2520/-
- ✓ Veg Meals are Available

4 Season Travels.Pvt. Ltd. | +91 8130106203 | info@4seasontravels.com

वैदिक नित्य कर्म विधि (अंग्रेजी)

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, सन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मन्त्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, भजन इत्यादि सम्मिलित है विशेष बात यह है कि सभी मंत्रों का उच्चारण अंग्रेजी में एवं उनके अर्थ भी अंग्रेजी में दिए गए है। सभी मन्त्र मोटे और लाल, तथा अंग्रेजी वाले सभी मन्त्र नीले रंग में अर्थ सहित मुद्रित है। 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 144 संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य एक प्रति 350/- रुपये डाक व्यय अलग होगा।

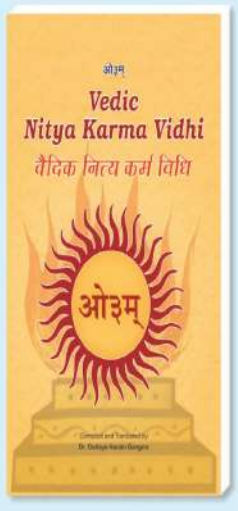

पुस्तक मंगाते हेतु हमारे निम्न खाते में राशि भेजकर फोन पर सूचित करें:

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या : 0127002100058167
IFSC Code : PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

मधुर प्रकाशन
दिल्ली-110006

॥ ओ३म् ॥

प्रो० सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134

प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काऊंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा

द्वारा प्रकाशित

आर्य समाज बुला रहा है

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान
पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय (एम. ए.)

द्वारा आर्य समाज के मूलभूत सिद्धांतों व विविध आयामों पर लिखी गई एक अत्यंत प्रभावी लघु पुस्तिका
(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय व पठनीय पुस्तिका

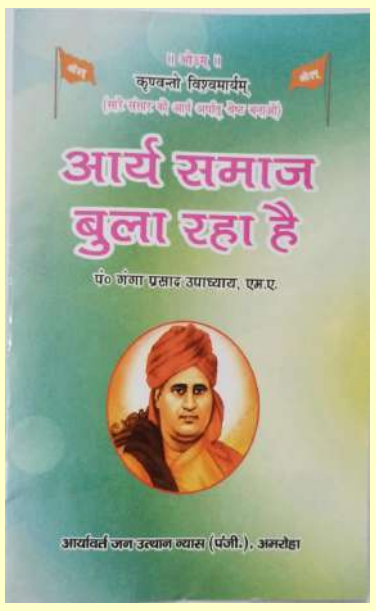

आर्य समाज के उत्सवों, यज्ञ समारोहों तथा पारिवारिक या सामाजिक अनुष्ठानों के शुभ अवसर पर सैकड़ो की संख्या में इस लघु पुस्तिका का वितरण कर जन जन तक पहुंचाएं आर्य समाज की विचारधारा और उसके 10 सार्वभौमिक नियमों का मर्म।

पृष्ठ-12 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 12/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से दी जायेगी इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी है सुविधा।

अर्चना यज्ञ पद्धति

(महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ विधि सहित सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रमाणित यज्ञ की एक उत्कृष्ट पुस्तक)

(घर-घर पहुंचाएं यज्ञ की पुस्तक)

आर्य जनों की विशेष मांग पर साप्ताहिक सत्संगों, विशिष्ट बृहद यज्ञों एवं पारिवारिक तथा दैनिक यज्ञ की पुस्तक अर्चना यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) विगत 30 वर्षो से निरंतर प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में विशेष मंत्रों, प्रार्थनाओं तथा भजनों का भी समावेश किया गया है।

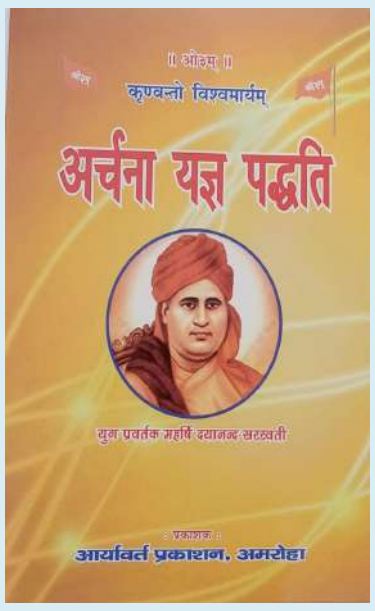

अत्यंत आकर्षक तथा सुंदर टाइटल के साथ उत्तम पेपर

पृष्ठ-40 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 20/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर 40% की विशेष छूट तथा वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

पुस्तक लेने हेतु आज ही अपना ऑर्डर बुक कराएं।

शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

दयानंद लघुग्रंथ संग्रह

(महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित पांच लघु पुस्तकों_पंच महायज्ञ विधि, अर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु तथा आर्याभिविनय का एक अनूठा संग्रह)

(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

आर्य जगत की विशिष्ट विभूति, वैदिक साहित्य के प्रकांड विद्वान, उच्चकोटि के लेखक, प्रभावशाली वक्ता तथा आर्ष साहित्य के मर्मज्ञ **पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी द्वारा संपादित** दयानंद लघुग्रंथ संग्रह का सर्वप्रथम प्रकाशन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, द्वारा दिल्ली में दिनांक 25 से 28 अक्टूबर 2012 को संपन्न अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर किया गया था। इसी का पुनर्प्रकाशन आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा महर्षि दयानंद के उत्कृष्ट साहित्य को जन-जन तक पहुंचने के उद्देश्य से फिर एक बार किया गया है। निश्चय ही, यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय

पृष्ठ-212 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 60/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट दी जायेगी। साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

इस अनमोल ग्रन्थ को प्राप्त करने के लिए आज ही बुक कराएं अपना ऑर्डर। शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति अथवा जन्म दिवस आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर आर्ष साहित्य के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

तो फिर देर किस बात की ?

अभी उठाइए अपना फोन और मो. नं. 8630822099 अथवा 7017448224 पर बुक कराइए अपना ऑर्डर।

- : प्राप्ति स्थल :-

डॉ. अशोक कुमार आर्य, द्वारा आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.)

गोकुल बिहार, निकट श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज, अमरोहा (उ0प्र0)-244221 (मो. 9412139333, 8630822099)